Dainik Bhaskar (Indore), 02rd March 2012, Page-2

सर्न प्रोजेक्ट | जल्द होगा समझौता

ब्रह्मांड की उत्पत्ति का रहस्य खोजेगा आईआईटी इंदौर

संजय गुप्ता | इंदौर

ब्रह्मांड की उत्पत्ति के रहस्य से पर्दा उठाने के लिए जेनेवा, स्विटजरलैंड में चल रहे सर्न (यूरोपियन सेंटर फॉर न्यूक्लियर रिसर्च) इंटरनेशनल प्रोजेक्ट में अब आईआईटी इंदौर भी भागीदारी करने जा रहा है। इसके लिए इंदौर आईआईटी में ग्रिड कम्प्यूटिंग लैब बनेगी। जो सर्न प्रोजेक्ट और उससे जुड़े देशों की लैब से जुड़ी रहेगी, जिससे डाटा का आदान-प्रदान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होगा।

करीब डेढ़ करोड़ की लागत वाले इस प्रोजेक्ट में हिस्सेदारी के लिए आईआईटी इंदौर की चार सदस्यीय टीम जेनेवा का दौरा करेगी। जल्द ही आईआईटी, परमाणु ऊर्जा आयोग, सर्न और एलाइस (ए लार्ज आयन कोलाइडर एक्सपेरिमेंट) के बीच एमओयू होने जा रहा है। आईआईटी इंदौर का यह पहला इंटनेशनल प्रोजेक्ट होगा। इससे पहले आईआईटी मुंबई के शिक्षक ही प्रोजेक्ट से जुड़े थे।

भौतिकी की सबसे बड़ी रिसर्च

यह प्रोजेक्ट भौतिकी का सबसे बड़ा शोध है। फ्रांस-स्विस सीमा पर करीब 27 किमी लंबाई में जमीन के 350 फीट नीचे यह प्रोजेक्ट चल रहा है। इसमें विश्व के 80 देश व 6500 वैज्ञानिक योगदान दे रहे हैं। ।

यह करेगा आईआईटी

सर्न प्रोजेक्ट के तहत अत्यधिक ऊर्जा पैदा कर मूल कण प्रोटॉन, न्यूट्रॉन व अन्य को क्वार्क ग्लोन प्लाज्मा में बदला जाता है। इस प्लाज्मा से फिर मूल कणों के बनने की प्रक्रिया होती है। आईआईटी इंदौर डिटेक्टर द्वारा इन्हीं कणों के बनने की प्रक्रिया का अध्ययन करेगा।

समझौता करने जा रहे हैं

आईआईटी इंदौर अपना पहला इंटरनेशनल प्रोजेक्ट शुरू करने जा रहा है। सर्न के साथ समझौते की सारी औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं।"

डॉ. रघुनाथ साहू,
असिस्टेंट प्रोफेसर,
आईआईटी इंदौर

प्रोजेक्ट से लाभ

» भौतिकी का मूल ज्ञान बढ़ेगा। » मेडिकल साइंस में इसका उपयोग बड़े स्तर पर होगा। » कई अंजान कणों की जानकारी मिलेगी। » ब्रह्मांड की उत्पत्ति से जुड़े अनसुलझे सवालों का जवाब मिलेगा।